कब तक इंतज़ार करूँ...

(कहानी)

मई महीने की अंधेरी रात..... माणिक रेलगाडी में बैठे खिड़की से बाहर की सुंदर नज़ारा देख रहा था। उसकी गर्मी की चुट्टी की समय है। वह पहली बार घर से दूर, परिवार से अलग रह रहा था। इसलिए ही जब वो रेलगाडी में बैठे खिड़की से बाहर का नज़ारा देख रहा था लेकिन उसकी मन में घर की यादे दौड-दौडकर आ रही थी, तब ही रेलगाडी रुकी पर उसे पता भी नहीं चला।

तभी कहीं से, 'चाय...चाय...चाय,- चायवाले की आवाज़ उसकी कानों में पड़ी। तब उस एहसास हुआ की स्टेशन में पहुँच गया है वो। वो अपनी समान लेकर रेलगाडी से उतरा। अब उसे अगली रेलगाड़ी की इंतज़ार है

जो उसकी गाँव तक जाती है।
लेकिन उस रेलगाडी के आने में अब बहुत समय ~~है~~ लगेगी इसलिए माणिक ने सोचा की तब तक वो चाय ही पी ले। वो चायवाले से चाय खरीद कर पीने लगा।

तब उसकी नज़र एक लड़की पर पड़ी। वो वहाँ ~~xxx~~ प्लाटफॉर्म नं-2 में अकेली खड़ी थी। और उसके चहरे से लग रहा था कि वो किसी की इंतज़ार में परेशान खड़ी है। माणिक ने जानने की इच्छा से चायवाले से पुछा, 'अरे भाई, वो लड़की का जानते हो क्या आप ?। चायवाले ने ~~xxx~~ उत्तर दिया, कि, अरे साहिब, इस लड़की को मैंने बहुत बार देखा है। यही पर हर साल इसी महीने में आती है। पहले लगता था कि किसी की इंतज़ार कर रही है पर बाद में पता चला की उसको कोई

मानसिक बिमारी है। मुझे सिर्फ इतना ही पता है। अगर आगे और कुछ जानना हो तो करीम चाचा से पुछिए।

करीम चाचा कौन है? माणिक ने पूछा। चायवाले ने बताया कि करीम चाचा की स्टेशन पे दुकान है। उन्हें सब पता उस लड़की के बारे में।

माणिक उठकर करीम चाचा के पास गया। उनसे मिला और बातो-बातो में उस लड़की के बारे में पूछा।

करीम चाचा संदेह से प्रश्न किया कि, 'तुम क्यों जानना चाहते हो उस लड़की के बारे में?'।

'अरे चाचा जी, मैंने सोचा की अगर उसकी परेशानी जान लू तो उसे मदद कर पाऊँगा। माणिक ने हँसकर जवाब दिया।

करीम चाचा आगे कहते है, 'बेटा तुमने सिर्फ एक लडकी को देखा।

उस लड़की की लाल रंग की साड़ी पर तुम्हारी नज़र नहीं पड़ी। उसकी सिर पर लगी सिंदुर तुम्हें नज़र नहीं आया।'

'बेटे, वो नंदिनी बेटी है। मेजर. सिंह साहब की बहु। वो अपनी पति की इंतज़ार कर रही है।' माणिक ने बोला, 'वो चायवाला बता रहा था कि उस लड़की की मानसिक संतुलन बिगड़ा हुआ है।' 'बेटा, वैसे कोई बात नहीं है। लोग ऐसी ही उधर-इधर सुनी बाते बोलते है।'

तभी एक ट्रेन आती है। वो ट्रेन वहाँ कुछ समय केलिए रुकती है और फिर चली जाती। फिर से माणिक उस लड़की तरफ़ देखता है। उसने देखा कि लड़की निराश होकर लौट जा रही है।

माणिक चौंक गया उसने पलटकर करीम चाचा को देखा,

करीम चाचा ने एक छोटी से दर्द भरी मुस्कुराहट के साथ कहने लगे, 'बेटा जी, नंदिनी बेटी जिस पति का इंतज़ार कर रही थी उस पति की मौत की खबर दो साल पहले ही आ गई थी।' माणिक को अचानक एक धक्का सा लगा।

तीन साल पहले कि बात है मेजर सिंह साहिब ने अपने छोटा बेटा रोहन की और नंदिनी की शादी करवाई थी। शादी तो बड़ी धूमधाम से हुई थी। उस समय की नंदिनी की मुस्कुराहट अभी भी मुझे याद है। रोहन और नंदिनी बचपन के दोस्त थे। बड़े होते उनकी दोस्ती प्यार में बदल गया। और सिंह जी ने उनकी शादी भी

कर दी। बस उस खुशियाँ सिर्फ तीन महीने की थी। रोहन बेटा एक सैनिक था। और कुछ काम से उसे वापस लौटना पड़ा। और कुछ दिन बाद खबर आई की रोहन की मृत्यु हो गई है। बॉम्ब विस्फोट के कारण उनकी मौत हुई थी साथ उनकी कई साथियाँ भी मारे गए। किसी शरीर नहीं मिला। लेकिन नंदिनी बेटी ये मानने केलिए तैयार नहीं है कि रोहन अब जीवित नहीं है।

नंदिनी बिटिया कहती है, कि रोहन ने उससे मई के महीने में वापस आने का वादा किया था। और रोहन कभी अपना वादा नहीं तोडते। उन्होंने मुझसे इंतज़ार करने केलिए कहाँ था इसलिए मैं उनकी इंतज़ार करूँगी।

तभी एक ट्रेन की आवाज़

आती है। माणिक जिस ट्रेन की इंतज़ार कर रहा था वो वही ट्रेन थी।
माणिक ने करीम चाचा से अलविदा कहाँ। और ट्रेन के रुकने पर वह चडा और अपनी सीट पर जाकर बैठ गया। थोडी देर में ट्रेन चलने लगी, माणिक फिर एक बार खिड़की से बाहर देखते बैठ गया और इस बार भी प्रकृति की सुन्दरता की आस्वादन नहीं कर रहा था बल्कि वो देख तो बाहर रहा था लेकिन उसकी मन उस लडकी तसवीर आ रहीं थी, करीम चाचा ने सही कहाँ था कि मैंने उसकी लाल रंग की साडी, माथे का सिंदूर आदि नहीं देखा।
मैंने तो सिर्फ उसकी चहरे पर जो परेशानी थी वो देखी। उसके आँखो जो आँसू थे वो देखा,

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 113

और उसकी अकेलापन को देखा। और इन्ही सब महसूस किया।

माणिक फिर नंदिनी की चेहरे को याँद किया। उसकी वो मासूम चेहरा और वो आँसू से भरी आँखे जिसमे सिर्फ एक ही सवाल झलक रहा था। अब मैं, 'कब तक इंतज़ार करूँ....।

====

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)